पाठ 14. चंद्रयान

कविता का उद्देश्य

प्रस्तुत कविता का उद्देश्य बच्चों को भारत की वैज्ञानिक उपलब्धियों से अवगत करवाते हुए चंद्रयान से जुड़ी जानकारियाँ देना है। चंद्रयान 3 के द्वारा चाँद के दक्षिणी ध्रुव पर पहुँचकर भारत ऐसा करने वाला विश्व का पहला देश बन गया है। इस कविता में भारतीय वैज्ञानिकों के अथक परिश्रम की प्रशंसा की गई है।

कविता का सारांश

इस कविता में कवि ने चंद्रयान के चंद्रमा की सतह पर उतरने का वर्णन करते हुए भारतीय वैज्ञानिकों की तारीफ की है। कवि कहता है कि देखो चंद्रयान की टीम ने कैसा अनोखा काम किया है, उसने युगों-युगों से सूत कातती अम्मा को आराम दिया है। अर्थात् आज तक हम चंद्रमा के बारे में यही सुनते आ रहे हैं कि चंद्रमा पर एक बूढ़ी अम्मा चरखे से सूत कात रही है, परंतु अब भारतीय चंद्रयान ने वहाँ पहुँचकर इस मिथ्या प्रसंग पर विराम लगा दिया है। यही चंद्रमा पहले झिंगोला यानी पहनने के लिए मोटा वस्त्र माँगता था। इसी चंद्रमा का मुँह टेढ़ा था और यही सबसे अनोखा था।

अब बालक कृष्ण अपनी माँ यशोदा से चंद्रमा रूपी खिलौना माँगने की जिद नहीं करेंगे। अब वे चंद्रमा रूपी खिलौना हाथ में लेकर नई बाल-लीलाएँ रचेंगे। इतना ही नहीं अब हम भी चंदा मामा को दूर का नहीं कहेंगे और उन्हें पास जाकर देखेंगे।

अध्यापन संकेत

बच्चों को पाठ-वाचन से पूर्व **पहले पहल** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न पूछें। उन्हें चंद्रयान के बारे में बताएँ। कविता का सुर और लय में वाचन करवाएँ।

बच्चों से पूछें एवं समझाएँ–

- आप चाँद को किन-किन नामों से पुकारते हो?
- भारत ने अब तक चाँद पर कितने चंद्रयान भेजे हैं?
- बच्चों को चंद्रयान-3 के बारे में विस्तार से जानकारी दें।
- उनसे भारत के किन्हीं दो प्रसिद्ध वैज्ञानिकों के नाम बताने के लिए कहें।
- कविता के कठिन शब्दों के अर्थ समझाएँ।

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।